ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

1857 की क्रान्ति तथा कारतूसों का प्रश्न

डा. अनिल कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
वी.एस.एस.डी कालेज, कानपुर
सह **गीतू मिश्रा**
वी.एस.एस.डी कालेज, कानपुर

1857 ई0 की क्रान्ति भारत की पवित्र भूमि से विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने का प्रयास था। वर्षों की दबी हुई चिंनगारी एकदम ज्वालामुखी बन गई। किसने उसे भड़काया, किस प्रकार यह अग्नि प्रज्वलित हुई, ये ऐसे प्रश्न हैं जो इतिहास में विवादास्पद हैं और सर्वदा रहेंगे। क्रान्ति के समय से ही इसका कारण तथा इसके संघटन एवं संचालन के विषय में खोज का प्रयत्न होता रहा है। क्रान्ति के अपराधियों के मुकदमों में अपराधियों तथा दोनों पक्षों के साक्षियों से बार–बार इस विषय पर पूछा जाता था। न्यायाधीषों के निर्णय में इस विषय पर दृष्टिपात किया गया है किन्तु उनके पढ़ने से क्रान्ति के वास्तविक कारण के ज्ञान में अधिक सहायता नहीं प्राप्त होती। कहीं–कहीं उन बातों को भी विशेष महत्व दे दिया गया है जिन पर साधारणतः कोई ध्यान भी न दिया जाता।

इतिहासाकारों में से किसी ने इसे मुसलमानों का विद्रोह लिखा, किसी ने इसे हिन्दुओं की संकीर्णता का फल बताया और किसी ने इसे केवल सिपाहियों का विद्रोह लिखा, किन्तु इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया कि वह कौन–सी शक्ति थी जिसने भारतवर्ष के प्रत्येक नर–नारी, हिन्दू व मुसलमान को एक सूत्र में बाँधकर अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध खड़ा कर दिया था। यह शक्ति थी भारतवर्ष के स्वातंत्रा की अभिलाषा। स्वतंत्र भारत का क्या दशा होगी, यहाँ किसका राज्य होगा, हिन्दू शासन करेंगे या मुसलमान, मरहठों की सत्ता होगी अथवा मुगलों की, यहाँ की आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था क्या होगी, इस ओर सम्भव है कि थोड़ ही लोगों ने ध्यान दिया हो किन्तु स्वतंत्रता के भाव से उत्तरी भारत का अधिकांश भाग प्रेरिल था और इसी भाव ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया। यदि वे एक स्थान पर पराजित हो जाते तो दूसरे स्थान पर अपना मोचा बना लेते किन्तु उनके उत्साह मे कमी न होती। उन्ह अपने उद्देश्य की सफलता का विश्वास था। यद्यपि क्रान्ति के कुछ नेताओं की अपनी समस्याएँ थीं, जागीरदारी के झगड़े थे, इनमें से कुछ ने बड़ी–बड़ी भूलें भी कीं, कहीं–कहीं कमजोरी भी दिखाई किन्तु सामान्य रूप से उनके समक्ष जो लक्ष्य था, वह इतना उच्च तथा महान था कि इन भूलों को इतिहासकार भी अधिक महत्व नहीं दे सकता। कुछ क्रान्तिकारी समय के पूर्व अग्नि में कूद पड़े। कुछ योजनानुसार समय की प्रतीक्षा करते रहे। साधारण लोगों को उन पर क्रोध आता होगा। वे उन्हें कायर समझते होंगे किन्तु बिना योजना के सफलता मिलनी कठिन है, यह बात साधरण सैनिक न समझते थे। इसका विस्फोट किस समय होना था, यह उन्हें ज्ञात न था। वे तो केवल यह जानते थे कि यदि एक स्थान से क्रान्ति प्रारम्भ हो जाये तो प्रत्येक स्थान में उसका अनुसरण हो। क्रान्ति

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

असफल हुई। अंग्रेजों की दमन नीति ने षड्यंत्र तथा सैनिक शक्ति के बल पर भारतीयों को कुचल दिया। बहुत से भारतीयों ने भी अंग्रेजों का साथ दिया। उनके साथ मिलकर अपने भाइयों के विरूद्ध लड़े। वे गुप्तचर बने, उन्होंने षड्यंत्र रचा, तथा गोलियाँ चलाई। एक स्थान पर पराजित होकर वे दूसरे स्थान पर पहुँच जाते, दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर मोर्चा बना लेते। सैनिक शक्ति तथा राज्य–सत्ता अंग्रेजों के हाथ में थी किन्तु फिरंगियों से भारत–भूमि को रिक्त कराने के उत्साह ने उन्हें अजेय बना दिया था। कारतूसों का झगड़ा खड़ा हो गया। भारतीयों को संकीर्णवादी सिद्ध करने के लिए कारत्सों को ही क्रान्ति का मुख्य कारण बताया जाता है किन्तु चिकने कारतूओं को क्रान्ति के विस्फोट का सुगम साधन ही कहा जा सकता है। इस प्रश्न ने सुलगती हुई आग को ज्वालामुखी बना दिया। समय के पूर्व निश्चित योजना में विघ्न पड़ गया।

1856 ई0 के अन्त में एनफ़ील्ड राइफ़लो का प्रयोग भारतवर्ष में प्रारम्भ होना निश्चय हुआ। उनके लिए विलायत से चिकने कारतूस आये और यह आदेश दिया गया कि इसी प्रकार के कारतूस कलकत्ते तथा मेरठ के आर्डिनेंस डिपार्टमेंट बनाये।

अभी इन कारतूसों का आम प्रयोग प्रारम्भ भी न हुआ था कि यह प्रसिद्ध होने लगा कि इनमें गाय तथा सुअर की चर्बी का प्रयोग होता है।[1] 27 जनवरी 1857 ई0 को सरकारी आदेश हो गया कि भारतीय सेना को जो कारतूस दिये जायें उनमें सैनिक जो चीज़ उचित समझें प्रयोग कर सकते हैं। तत्पश्चात् मेजर जनरल हेयरसे कमानडिंग प्रेसीडेंसी डिवीजन के लिखन पर यह सुविधा दे दी गई कि मोम तथा तेल से कारतूस चिकनाये जा सकते हैं और नया कागज उन्हीं मसालों से तैयार किया जा सकता है जो इससे पूर्व प्रयोग में आते थे।[2]

यदि कारतूसों का ही झगड़ा होता तो यहीं बात समाप्त हो जानी चाहिये थी, किन्तु वास्तव में भारतीय अब अंग्रेजों की किसी बात पर विश्वास नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अगणित संधि–पत्र देखे थे जो बात की बात में समाप्त कर दिये गये थे। जब उन लिखित संधि–पत्रों का कोई वि" वास नहीं तो फिर इन आदेशों का क्या विश्वास किया जा सकता था। जो आज एक परिस्थिति म दे दिये गये और कल फिर दूसरी परिस्थिति में उनका खंडन हो सकता था। मोम और तेल के प्रयोग की सुविधा केवल कागज ही पर रहेगी और जब बड़ी संख्या में इनका प्रयोग होगा तो फिर यह बात कहाँ तक चलेगी, यह बात किसी की समझ में न आती थी। फरवरी में बरकपुर में एक सैनिक न्यायालय ने कारतूसों तथा उन पर लपेटे जाने वाले कागजों के विशय में पूंछ–ताँछ कराई।[3] जनरल हेयरसे ने इस न्यायालय को रिपोर्ट भेजने के उपरान्त सरकार को लिखा कि ''हम बारकपुर में एक सुरंग पर बैठे हैं जो शीघ्र उड़ने वाला है।''[4] भारतीय सैनिकों का उसे बड़ा अनुभव था। वह उनकी भावनाओं को समझ गया था। वह उनके नेत्रों में स्वतंत्रता की महत्त्वाकांक्षा की चमक देखता था किन्तु सम्भवतः वह यही समझता था कि लोगों को भय है कि उन्हे जबर्दस्ती ईसाई बनाया जाने वाला है। यह समझना उसके लिए असम्भव था कि भारतीय, अंग्रेजी राज्य ही का अन्त करके स्वतंत्र होना चाहते हैं। उसने 9 फरवरो 1857 ई0 को परेड पर सैनिकों को समझाया और उनकी 'शंकाओं के

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

समाधान का प्रयत्न किया[5] किन्तु कारतूसों के विषय में दूर–दूर तक पत्र–व्यवहार होने लगा था और लोग क्रान्ति के लिए तैयार हो रहे थे।[6] आग बड़ी तेजी से अम्बाले तथा सियालकोट तक फैल गई।[7]

बरकपुर से 100 मील पर बरहामपुर की छावनी थी। वहाँ भी वही आग सुलग रही थी। 25 फरवरी को बरकपुर से 34वीं रेजीमेंट के कुछ सैनिक बरहामपुर में आये। उनसे सम्पर्क में आने पर बरहामपुर की नं0 19 रेजीमेंट ने भी नये कारतूस स्वीकार न करने का संकल्प कर लिया। कर्नल मिचेल ने 26 फरवरी की परेड पर नये कारतूसों के अभ्यास का आदेश दिया। सैनिकों ने नये कारतूसों को स्वीकार न करना निश्चय कर लिया था। जब कर्नल मिचेल को यह ज्ञात हुआ तो उसने भारतीय कमीशन्ड अफसरों को धमकाया कि वे अपनी कम्पनी के सैनिकों को समझा दें कि यदि उन्होंने आज्ञा की अवहेलना की तो उन्हें कठोर दंड दिये जायेगे। रात्रि में 10 और 11 के बीच में सैनिकों ने वह घर, जिसमें सैनिकों के हथियार तथा सामान रहते थे, तोड़ डाला किन्तु भारतीय अफसरों की सहातया से मिचेल ने 3 बजे तक सबको शान्त कर लिया। प्रातःकाल की परेड पर भी कुछ न हुआ[8] किन्तु इस पल्टन को दंड देने तथा भारतीयों को दहलाने के लिए 29 मार्च 1857 ई0 को मध्यान्ह में 53वीं गोरा रेजीमेंट क 50 सैनिक नदी के मार्ग से कलकत्ता पहुँचे। बरहामपुर की 19वीं रेजोमेंट के बरकपुर बुलाये जाने के आदेश दिये जा चुके थे। गोरा पल्टन के पहुँचने के समाचार से मंगल पाण्डे का रक्त खौल उठा। उसने अपने साथियों को युद्ध के लिए ललकारा किन्तु अभी युद्ध का समय नहीं आया था। सैनिक शान्त रहे। अंग्रेज अधिकारियों ने उसकी हत्या करनी चाही किन्तु जब वह घेर लिया गया तो उसने अंग्रेजों द्वारा मारे जाने की अपेक्षा आत्महत्या कहीं अच्छी समझकर स्वयं गोली मार ली। वह मरा नहीं किन्तु घायल हो गया और चिकित्सालय भेज दिया गया।[9] 31 मार्च को 19वीं भारतीय पैदल रेजीमेंट को बरकपुर में बुलाकर उसे भंग कर दिया गया।[10] सैनिकों ने अपमानित होकर भी कुछ न कहा और कलकत्ते के अंग्रेज, जो अत्यन्त भयभीत थे, संतुष्ट हो गये। 8 अप्रैल को मंगल पाण्डे को फाँसी दे दी गई।[11] 21 अप्रैल को जमादार ईश्वरी पांडे को भी, जिसने मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने से मना कर दिया था, फाँसी दे दी गई।[12] 34वीं रेजीमेंट के विषय में पूछताछ के उपरान्त जो निर्णय हुआ, उसमें सिक्खों तथा मुसलमानों की खूब पीठ ठोंकी गई और उन्हें राजभक्त तथा हितैशी एवं हिन्दुओं को विद्रोही सिद्ध किया गया।[13] एक अधिकारी, मुसलमान सैनिकों से वास्तविक बात का पता लगाने के लिए, नियुक्त हुआ किन्तु इस अधिकारी को कोई सफलता प्राप्त न हुई और अप्रैल के अन्त से पूर्व लार्ड कैनिंग को विश्वास हो गया कि एशियाई राष्ट्रों की पारस्परिक शत्रुता से, जो सर्वदा से ब्रिटिश सत्ता का बहुत बड़ा आधार समझी जाती है, कोई लाभ नहीं हो सकता। ''हमारे विरुद्ध हिन्दू तथा मुसलमान दोनों संघटित हो गये हैं।''[14]

मार्च के अन्त में कारतूसों का प्रश्न पंजाब में भी पहुच गया और सियालकोट के सैनिकों को बरकपुर के भाइयों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया जाने लगा। 16 अप्रैल को अम्बाले में कई बगलों में आग लगा दी गई। 18 अप्रैल को

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

अम्बाले की दो भारतीय पल्टनों ने कारतूस लेने से इनकार कर दिया। लखनऊ में भी कुछ समय से क्रान्ति के विषय में गोष्ठियाँ होने लगी थीं।[15] अवध इररेगुलर इन्फेन्ट्री की 7वीं रेजीमेंट ने मई के आरम्भ में नये कारतूसों का विरोध प्रारम्भ कर दिया और 3 मई को लखनऊ, मूसाबाग में विद्रोह के चिन्ह पाये गये किन्तु तोपें रेजीमेंट के सामने लगा दी गई और उनसे हथियार ले लिये गये। दूसरे दिन हेनरी लारेंस ने गवर्नर जनरल को लिखा कि ''कहा जाता है कि 7वीं रेजीमेंट पर जो आघात हुआ, उसका नगर में बड़ा प्रभाव हुआ। लोग मुझसे यहाँ तक कहते हैं कि यदि 7वीं रेजीमेंट खड़ी रह जाती तो 48वीं रेजीमेंट उस पर गोली न चलाती।[16]

संदर्भः

1 अपेंडिवस टु तेपर्स रेलेटिव टु दी म्यूटिनीज इन दी ईस्ट इंडीज (लन्दन 1857 ई0) पृ0 2–4
2 सिक्रेटरी गवर्नमेंट आफ इंडिया का तार ऐडजुटेंट जनरल के नाम, कलकत्ता जनवरी 27, 1857 ई0।
3 स्टेट पेपर्स, भाग–1, पृ0 7–14।
4 स्टेट पेपर्स, पृ0 24।
5 स्टेट पेपर्स, पृ0 27।
6 रेड पैम्फलेट, पृ0 19।
7 रेड पैम्फलेट, पृ0 20।
8 स्टेट पेपर्स भाग–1, पृ0 41–42, डयूक आफ अरगेल, इंडिया अण्डर डलहौजी ऐंड केनिंग (लन्दन 1864) पृ0 81।
9 स्टेट पेपर्स भाग–1, पृ0 109–113।
10 स्टेट पेपर्स भाग–1, पृ0 100–103।
11 स्टेट पेपर्स भाग–1, पृ0 127।
12 स्टेट पेपर्स भाग–1, पृ0 211।
13 स्टेट पेपर्स भाग–1, पृ0 169।
14 सिप्वाए वार इन इंडिया, भाग–1, 564–565।
15 रेड पैम्फलेट, पृ0–30।
16 सिप्वाए वार इन इंडिया, भाग–1, पृ0 587–590।